चंदनमन

सं. : रामेश्वर काम्बोज 'हिमांशु'
भावना कुँअर

चंदनमन
सं. : रामेश्वर काम्बोज 'हिमांशु' / भावना कुँअर

चंदनमन

(18 चर्चित कवियों के हाहकु)

चंदनमन

(हाइकु-संग्रह)

सम्पादक :
रामेश्वर काम्बोज 'हिमांशु'
डॉ. भावना कुँअर

अयन प्रकाशन, महरौली, नई दिल्ली

ISBN : 978-81-7408-

अयन प्रकाशन
1/20, महरौली, नई दिल्ली - 110 030
दूरभाष : 2664 5812
e-mail : ayanprakashan@rediffmail.com

•

मूल्य : 160.00 रुपये

प्रथम संस्करण 2011 © रचनाकार

CHANDAN MAN (Haiku) Ed.by Rameshwar Kmboj 'Himanshu'
and Dr. Bhawna Kunwar

मुद्रक : विशाल कौशिक प्रिंटर्स, शाहदरा, दिल्ली-110093

मनोगत

क्षण की इकाई जितनी छोटी है, उतनी ही महत्त्वपूर्ण और प्रभावकारी है। संस्कृत की एक सूक्ति है- 'आयु का एक क्षण सौ करोड़ सोने की मुद्रा में भी प्राप्त नहीं हो सकता।' यही बात जापानी छन्द हाइकु पर भी लागू होती है। इस छन्द में क्षण की अनुभूति बहुत महत्त्वपूर्ण है। इस क्षण पर, भाव की स्फुलिंग पर जिसकी पकड़ मज़बूत होगी, भाषा के सन्धान में जिसे निपुणता प्राप्त होगी; वही इस विधा में सफल हो सकता है। जो एक पंक्ति को तोड़कर कुछ भी घसीट देने को हाइकु समझते हैं और जो इसे आसान विधा और प्रसिद्धि का शॉर्टकट समझकर मैदान में उतर पड़े हैं, उनके लिए इसमें सफलता की कम ही गुंजाइश है। 'हाइकु' के अखाड़े में इस तरह के सूरमाओं की कमी नहीं है। जो क्षण की सूक्ष्म अनुभूति को साध लेगा, वही जनमानस पर अमिट छाप छोड़ सकेगा।

हाइकु के लिए 5+7+5 = 17 अक्षर और कभी वर्ण की बात की जाती है। यहाँ यह समझ लेना ज़रूरी है कि 'अक्षर' को आम बोलचाल के रूप में न लिया जाए। 'अक्षर' का तकनीकी और भाषावैज्ञानिक अर्थ है- वह ध्वनि या ध्वनियाँ जो साँस के एक स्फोट में उच्चरित होती हैं। जब हम तकनीक की बात करें, तो 'अक्षर' को वर्ण का पर्याय नहीं माना जा सकता। हाइकु छन्द में वर्ण से आशय है- स्वर और स्वरयुक्त व्यंजन न कि हल् (स्वर रहित व्यंजन)। 'जानता' शब्द में दो अक्षर हैं- 'जान्' और 'ता', तीन स्वरयुक्त वर्ण हैं- जा, न और ता; अत: हाइकु के छन्द की शास्त्रीय बात करते समय इसे ज़रूर ध्यान में रखा जाए।

डॉ. सुधा गुप्ता जी ने अपनी मार्मिक अनुभूतियों को हाइकु के माध्यम से सफलतापूर्वक उकेर कर जहाँ हाइकु की शक्ति का अहसास कराया है,

वहीं भाव और शिल्प के स्तर पर यह भी सिद्ध कर दिया है कि समर्पित और सक्षम साहित्यकार ही गागर में सागर भर सकता है। आपकी इस परम्परा को डॉ. शैल रस्तोगी, डॉ. उर्मिला अग्रवाल, डॉ. भावना कुँअर, डॉ. सतीशराज पुष्करणा, डॉ. कुँअर बेचैन, आदि बहुत से हाइकुकारों ने आगे बढ़ाया है। जो क्षण की सूक्ष्म अनुभूति को साध लेगा, वही जनमानस पर अमिट छाप छोड़ सकेगा। नए हाइकुकार हमें अधिक आशान्वित करते हैं।

हाइकु विधा को आगे लाने में कुछ लोग निरन्तर प्रयासरत हैं। डॉ. शंकर प्रसाद और डॉ. पुष्करणा ने 'आरोह-अवरोह' मासिक में प्रति मास 30 हाइकुओं का प्रकाशन करके इस विधा को प्रोत्साहन दिया है। 'वीणा' मासिक में हाइकु पहले से ही छपते रहे हैं, लेकिन दिसम्बर, 10 में एक साथ एक ही कवि के 28 हाइकु छापकर इस विधा को महत्त्व प्रदान किया है। 'हंस' पहले से ही नई विधाओं को बढ़ावा देता रहा है। 'अप्रतिम' वार्षिकी में हाइकु-प्रकाशन सम्पादकों के व्यापक दृष्टिकोण का परिचायक है। विश्वजाल पर पूर्णिमा वर्मन ने 'अनुभूति' वेबसाइट के द्वारा इस विधा को जो ऊँचाई प्रदान की है, वह सराहनीय है। गर्भनाल, हिन्दी गौरव आदि विश्वजाल ने भी इस विधा को प्रोत्साहित किया है। डॉ. हरदीप सन्धु पंजाबी में पिछले कई वर्षों से हाइकु लिखती रही हैं। जुलाई, 2010 से हिन्दी हाइकु की शुरुआत करके इन्होंने विश्व के कई देशों के हज़ारों पाठकों तक हाइकु को पहुँचाया है; साथ ही कई नए हाइकुकारों को (जो कुछ अन्य विधाओं में पहले से ही सक्रिय थे) इस विधा से जोड़ा है। इनमें रचना श्रीवास्तव, कमला निखुर्पा, मंजु मिश्रा, निर्मला कपिला, नवीन चतुर्वेदी, उमेश महादोषी, प्रियंका गुप्ता, आदि कई रचनाकारों ने प्रभावशाली हाइकुओं से अपनी उपस्थिति का अहसास कराया है।

यह संकलन इस दिशा में एक छोटा-सा प्रयास है। आने वाले वर्षों में इस दिशा में और भी कार्य किए जाने हैं। आशा है इस 'चन्दनमन' के हाइकु आपके हृदय को छूने के प्रयास में सफल होंगे।

- सम्पादक द्वय

7 जनवरी, 2011

समर्पण

वर्गवाद से हटकर

अनुभूतिपरक सार्थक सर्जन को

प्राथमिकता देने वाले

सभी हाइकुकारों को

अनुक्रम

1.	भावना कुँअर	11
2.	देवी नागरानी	18
3.	हरदीप कौर सन्धु	21
4.	कमला निखुर्पा	28
5.	कुँअर बेचैन	35
6.	मंजु मिश्रा	41
7.	मुमताज़ टी एच खान	45
8.	नवीन चतुर्वेदी	48
9.	निर्मला कपिला	51
10.	पूर्णिमा वर्मन	55
11.	रचना श्रीवास्तव	62
12.	डॉ. रमाकान्त श्रीवास्तव	69
13.	रमेश चन्द्र श्रीवास्तव	74
14.	रामेश्वर काम्बोज 'हिमांशु'	77
15.	डॉ. सतीशराज पुष्करणा	84
16.	डॉ. सुधा गुप्ता	91
17.	सुदर्शन रत्नाकर	100
18.	डॉ. उर्मिला अग्रवाल	107
◆	परिचय	113

1. भावना कुँअर

मासूम लता
चीर हरण पर
सुबके - रोए

सजी तितली
मिलन आकांक्षा से
लूटा हवा ने

कोमल पात
लौ सरीखी धूप में
मोम-से ढले

हिरणी आँखें
चंचलता से भरी
तुझे पुकारें

छुआ तरु ने
कसमसाई लता
लिपट गई

आज तो धूप
खोई रही ख़्वाबों में
जगी ही नहीं

मुख पे तेरे
चाँदनी की ओढ़नी
चाँद की नथ

पिहू-पुकारे
विरहिणी-सी पिकी
पिया न आए

वृक्ष की लटें
सँवार रही हवा
बड़े प्यार से

रात रानी ने
खोले जब कुन्तल
बिखरा इत्र

बैठे हैं तरु
पहने हुए शाल
लता रानी का

भटका मन
गुलमोहर-वन
बन हिरन

नाचती-गाती
झूमती शाखाओं पे
खिला यौवन

खेत हैं वधू
सरसों हैं गहने
स्वर्ण के जैसे

चिड़ियाँ गाती
घटियाँ मन्दिर की
गीत सुनातीं

चाँदनी रात
जुगनुओं का साथ
हाथ में हाथ

खिड़की पर
है भोर की किरण
नृत्यांगना-सी

लेटी थी धूप
सागर तट पर
प्यास बुझाने

दुःखी हिरणी
खोजती है अपना
बिछड़ा छौना

परदेस में
जब होली मनाई
तू याद आई

नन्हा-सा बच्चा
माँ के आँचल में है
लिपटा हुआ

नन्हे हाथों से
मुझको जब छुआ
जादू-सा हुआ

रुनझुन-सी
पायल थी खनकी
गोरे पाँव में

सुबक पड़ी
कैसी थी वो निष्ठुर
विदा की घड़ी

था मन मेरा
उन्मुक्त पंछी जैसा
जाल में घिरा

भीगी चिड़िया
तूफान के ज़ोर से
सहम गई

स्नेह का रंग
बरसे कुछ ऐसे
छूटे ना अंग

यादों के मेले
हैं अब साथ तेरे
नहीं अकेले

मदहोश-सी
थी वो शाम सुहानी
गुज़री साथ

महका गया
मेरा तन-मन, ये
तेरा मिलन

मन उदास
जब तू नहीं पास
है बनवास

जब भी मिली
हमें तो सफ़र में
धूप ही मिली

न बस सका
मेरा ही आशियाना
सबका बसा

कहना चाहूँ
है छटपटाहट
कह ना पाऊँ

❑❑

2. देवी नागरानी

मै हूँ अकेली
मेरे संग सहेली
साँझ अकेली

सूर्य अस्त है
अस्त शाम नशीली
साँझ अकेली

सूर्य किरण
खेले आँख-मिचौली
साँझ अकेली!

थके कदम
आशियाँ-ऐ-ज़िन्दगी
कौन से गाम

ढलती उम्र
फ़िक्र की कर फ़िक्र
आई है शाम

बदल रूप
ज़िन्दगी दे रही है
छाँव या धूप

बुरा जो आए
जीवन में, भले का
अर्थ सिखाए

धीरज - दुख
में ले आता है, नया
संतोष सुख

वो घर मेरा
जिसका दिल होगा
रौशनदान

ये मौन क्या
कभी चुप बैठा है
कुछ कहे बिन?

बीज खुशी के
दिल में बोकर, दो
प्यार का पानी

बदल रूप
ज़िन्दगी दे रही है
छाँव या धूप

ये मौन क्या
कभी चुप बैठा है
कुछ कहे बिन?

❑❑

3. हरदीप कौर सन्धु

पहाड़ बनी
तुम बिन ज़िन्दगी
जीना मुश्किल !

मैं और तुम
जीवन के पहिए
साथ जो चलें !

तू मेरा सूर्य
घूमती जाऊँ ऐसे
मैं तेरी धरा !

समय कभी
हाथ नहीं आएगा
जियो खुशी से !

दिल उदास
मर्मस्पर्शी शब्दों ने
दिया हौसला

रक्त से नहीं
हृदय से बनते
पावन रिश्ते

लम्बा है रास्ता
बना तू रहनुमा
उम्मीद बनी

निराश मन
कोई भी न आएगा
थामने हाथ !

हिम्मत जुटा
मिलेगी वो मंज़िल
मन चाहे जो !

ओ मेरे मन
जला आशा का दीप
उजियारा हो !

चाह नवल
महके नया साल
चंदन बन

करें ये प्रण
जीतेंगे हारी बाज़ी
मैं और तुम

मन की प्यास
नहीं होती है कम
पीकर पानी

ज़िन्दगी से न
ये बचपन कभी
घट पाएगा

कैसे जिओगे,
जब जीवन से हो
प्यार लापता

ये जीवन है
सुख और दु:ख का
जमा-निकासी

कैसी वाटिका
जहाँ रंग-बिरंगे
फूल लापता

हमने किया
दौलत की दौड़ में
दूर खुदा को

जोड़-घटाव
ज़िन्दगी बुझारत
उमर भर

ऊँचे मकान
रेशमी हैं परदे
उदास लोग

रूठे दोस्त की
नहीं हुई मुझसे
यादें वे कम

दुःख न पाया
अहसास सुख का
तब कैसे हो ?

दर्द व प्रेम
मुझे जो तूने दिया
आँचल लिया

मन ने सुना-
अनकहा जो रहा,
भीगीं अँखियाँ

हूक-सी उठी
उमड़ी थीं सुधियाँ
छलकीं आँखें

बाँध ये मुट्ठी
झुक जाएगी तब
दुनिया सारी

खुश है मन
खिले मन-वाटिका
नए सुमन

नव वर्ष में
पाखी भी मिल गाएँ
जीवन-राग

बच्चे ने पूछा-
माँ ! तेरा प्रभु जाने
कौन सी भाषा?

पत्र जो मिला-
लगा बहुत पास
दूर का गाँव

कर्म से सजे
सबसे सुन्दर हैं
सर्जक हाथ

कच्चा ये धागा
भाई-बहन बीच
प्रेम प्रतीक

चहके वर्ष
आशाओं के वन में
चिड़िया जैसे

बाण की खाट
डब्बीदार थी छाँव
मिलती कहाँ !

❑❑

4. कमला निखुर्पा

आबाद होगा
निर्जन वनवास
मीत तो बना

दीप ने थामी
लौ की तलवार तो
भागा अँधेरा

माँग में तारे
थामें हाथों में दीप
रजनी-वधू

मन के मेघ
उमड़े है अपार
नेह बौछार

छलक उठे
दोनों नैनों के ताल
मन बेहाल

छूने किनारा
चली भाव-लहर
भीगा अन्तर

टूटा रे बाँध
कगार-बंध टूटे
निर्झर फूटे

फूटे अंकुर
मन-मधुबन में
तू जीवन में

खिली रे कली
चटख शोख रग
महकी गली

गाँठों से जुड़ा
बंधन कमज़ोर
रिश्तों की डोर

मन-पाषाण
बर्फीली संवेदना
कोहरा घना

सोंधी खुशबू
माटी-सा बचपन
ढूँढ़े रे मन

कस्तूरी-तन
दौड़े मन हिरन
जग-कानन

आधुनिकता
बाहर घुला-मिला
घर में तन्हा

आधुनिकता
खुला तन-बदन
भटका मन

संदेश तेरा
अमृत की बूँद-सा
परदेस में

कान्हा बसत
राधारानी-अवनि
फूल महके

दूधिया हँसी
खिला चाँद-चेहरा
फूल लजाए

धानी आँचल
लहराया धरा ने
रस उमड़ा

भीगीं पलकें
नयनों के प्याले में
सिन्धु छलके

मन-बगिया
तन फूलों का हार
महका प्यार

मन का सीप
पुकारे बादल को-
मोती बरसा

मेरी कविता-
पायल-छन्द बाँधे
नन्हीं मुनिया

मेरी कविता-
आँगन में फुदके
नन्हीं गौरैया

मेरी कविता-
गीत मधुर गाए
ज्यों कोयलिया

रातों ने ओढ़ी
कोहरे की चूनर
चाँद ठिठुरा

बर्फ़ पिघली
कल-कल बही है
पहाड़ी नदी

मन-कमल
पंखुड़ियाँ कोमल
मुरझाएँ ना

जेठ की धूप
शीतल पुरवाई
मेरा ये भाई

नैनों की सीपी
चम-चम चमके
नेह के मोती

बंद मुट्ठी में
घरौंदे की मिट्टी-सी
भाई की चिट्ठी

तेरा चेहरा
नभ में चमके ज्यों
भोर का तारा

आई हिचकी
अभी-अभी भाई ने
ज्यों चोटी खींची

मेरा सपना-
हँसे मुसकराए
भाई अपना

❑❑

5. डॉ. कुँअर बेचैन

किरन-परी
डरी-डरी नभ से
फिर उतरी

खिले कमल
अभिषिक्त हो गया
झील का जल

घर की छतें
लेती हैं सर पर
सब आफ़तें

जो थे अपने
वो भी बनते गए
टूटे सपने

टूटता रहा
जिसने कहा नहीं
केवल सहा

डूब गया वो
अपने जीवन से
ऊब गया जो

ताज़ा गुलाब
तेरा चेहरा है या
हसीन ख़्वाब

तेरा आँचल
चिलकती धूप में
घना बादल

थे मजबूर
तब ही हम हुए
तुमसे दूर

दिल का राज़
खोल गई आँसू की
गूँगी आवाज़

देती है यार
आँगन को घुटन
ऊँची दीवार

धरा को छुआ
जब भी सूरज ने
उजाला हुआ

नीची मुँडेर
पहुँची पड़ोस में
युवा कनेर

पत्नी हो मीत
तो घर की दुनिया
होती है गीत

प्रेम के छन्द
छोड़ गए मन में
मादक गन्ध

बर्फ़ मन में
फिर कहाँ से आए
आग तन में

बारिश हुई
बन गए सागर
आँखों के घर

मन की देह
धुली, जब बरसा
प्रीत का मेह

मीठे दो बोल
आने ही नहीं देते
रिश्तों में झोल

ये तेरा प्यार
सूखे में बारिश की
मधु-बौछार

ये नन्हीं नाव
कागज़ में बैठे हैं
बच्चों के भाव

रुकना पड़ा
बोझ था सर पर
झुकना पड़ा

रोती हैं आँखें
कट जाती जब
पंछी की पाँखें

विचार करें -
हम जब भी मरें
जीकर मरें

विषपायी हैं
हम भी आपके ही
अनुयायी हैं

सभी व्याकुल
कौन सँवारे टूटा
नदी का पुल

सिन्धु का नीर
किस दिन जानेगा
नदी की पीर

हाथ से छूटा
दिल हो कि दर्पण
ज़रूर टूटा

हुई अधीर
छुआ जब मेघ ने
नदी का नीर

❑❑

6. मंजु मिश्रा

बुनी चादर
रिश्ते हैं धागा, टूटे,
उधड़ जाए

देहरी-दीया
बाहर तेज़ आँधी
लौ काँपती है

दिल से कहा-
तर्क-कसौटी पर
मत परखो

लूटा सगों ने
गैर लूट लेते तो
दुःख न होता

आँखें और होंठ
अनबन-सी रही
राग जुदा थे

छलकी हँसी
होठों से आँखों तक,
ज़िन्दगी हँसी

चलो बटोरें-
जुगनूँ, चाँद-तारे
मिलें न मिलें

प्यार से सींचो
नफ़रत के पेड़
प्यार खिलेगा

अर्जुन की आँख-
अपने न पराये
कर्म सामने

तारे बटोरे
अँधियारी में खोले
बाँधी गठरी

चाँद जो बाँधे
रख ले गठरी में
अमा में खोले

भीतर छाया
बाहर नर्म धूप
जीवन - रूप

नैनों की झील
सपनों की नौकाएँ
तिरती रहीं

पहल करो
दूरियों का जंगल
विलीन होगा

आशा-किरण
जागे तो भागे दूर
सारे अँधेरे

धरा के आँसू
बादल की आँख से
तेजाब झरे

जल जाएगी
हरी-भरी धरती
सँभलो अब

तरु-तन से
खींच ली चुनरिया
सिसकी धरा

चाँद पर बस्ती
विज्ञान का सपना
बच्चा उदास

❑❑

7. मुमताज़ - टी एच खान

मिलता सुख
सबके ही द:ुखों को
दूर करके

मासूम कली
खिलने से पहले
गई कुचली

प्राण-बेटियाँ
घरौंदे ये बसाएँ
लोभी जलाएँ

हृदय दुखी
दुनिया के मेले में
ढूँढ़ता खुशी

काँटों में पला
सब की शोभा बन
सदा गुलाब

फैले उजाला
साथ बाँटेंगे जब
एक निवाला

ममता रोती-
कोई पिरो दे मेरे
बिखरे मोती

सुराही आज
बैठी है उदास-सी
होकर प्यासी

देखते आज
सिकुड़ता आँगन
दुखी हैं फूल

बीता समय
अपनों के साथ में
लौटाऊँ कैसे?

ओ पापी पेट !
और कितनी दूँ मैं
तुझको भेंट

ये लम्बी रात
करती इन्तज़ार-
उजाला फैले

नादान आँखें
खुश होने पर भी
रोने लगतीं

थे सच्चे दोस्त
समय की धार में
कहीं खो गए !

❑❑

8. नवीन चतुर्वेदी

जलन-भरी
मन की अभिलाषा
उसकी भाषा

आँखों में आँसू
पगतल में काँटे
तुमने बाँटे

तन संसारी
चिर शापित मन
भटकेगा ही

मरुथल में
मृग मरीचिकाएँ
किसे बताएँ

जीवन-गीत
निरर्थक सपने
देखे हमने

बजे सितार
मृदुल जीवन में
गूँजे तन में

कौन गली में
आते-जाते ठहरा
मन बावरा

गीत हमारे
गली-गली ने गाए
बादल छाए

तपन भरे
मौसम में हमने
सपने बोए

रात अँधेरी
देहरी दीप धरे
हैं ये पहरे

लहर उठे
मन के आँगन में
छू ले छिन में

माटी की गंध
बसे तन-मन में
कन-कन में

कजरारे हैं
नभ में छाए घन
गा मेरे मन

जल तरंग
बजती मधुमाती
मन को भाती

❑❑

9. निर्मला कपिला

खुशी घर की
न तू से है न मैं से
हम दोनों से

तुम आओ तो
दीप जलाऊँ सारे,
राह निहारूँ

तुम दीपक
मैं बाती हूँ तुम्हारी
जलेंगे संग

परछाई हूँ –
तेरी, साजन मेरे
संग चलूँगी

मुद्दत बाद
मिले जो हम तुम
बहार आई

तन्हाई मेरी
याद दिलाती तेरी
आओ साजन

ख़याल उसका
आ जाता बरबस
कोयल बोले

वफ़ा का सिला
उसने दिया मुझे
बेवफ़ाई से

सादगी तेरी
जान पे बन आई
छलिया है तू

सपनों का भी
स्वछन्द आकाश है
उड़ता चल

नदिया प्यासी
बादल से कहती-
प्यास बुझाओ

चाँद सितारे
बाँटते हैं रोशनी
तूने क्या बाँटा?

यदि तुम हो-
राग, तो मैं रागिनी
एक हैं दोनों

सूरजमुखी
सूरज-संग चले
प्रीत हो ऐसी

अश्रुधारा में
बह जाते हैं दुःख
रोने दो मुझे

प्यार के दीप
जलाते जाना तुम
जीवन भर

मेरे सपने
कब हुए अपने
लोगों ने छीने

उड़ना चाहूँ
तितली ज्यों उड़ती
पंख फैलाए

आहट पाऊँ
दर पे तो सोचूँ मैं
शायद वो हों

❑❑

10. पूर्णिमा वर्मन

दिन सुन्दर
तट पे कोलाहल
उमड़ी भीड़

भोर सुहानी
तपती दोपहर
खाड़ी के दिन

लू के थपेड़े
शान्त चित्त सहते
ताड़ के पेड़

बाँह उठाए
खजूर की कतारें
हमें पुकारें

जेठ महीना
कठिन दोपहर
शांत शहर

जीवन सारा
जीत उपलब्धियाँ
दौड़ से हारा

चौड़ी सड़कें
बहुमंज़िले घर
तंग बसर

बच रहना
सुख के समझौते
मँहगे होते

धूप नहाया
कड़क दोपहर
सूर्य अकेला

रेत-प्रदेश
नगर हरियाले
प्रेम से पाले

बिन बारिश
दिन भर झरते
सारे झरने

रेत के खेल
टीलों पर दौड़तीं
तेज़ गाड़ियाँ

अबके साल
सुनहरा मौसम
राग मधुर

आँगन तक
छम-छम दोपहरी
नीम पायलें

धूप ओढ़नी
उतरी दुपहर
सूरज बिंदी

बाग़ मुदित
भँवरों के गुँजन
फागुन आया

गर्म हवाएँ
खुली सड़क पर
बीन बजातीं

चिड़िया प्यासी
घर की छत पर
जमी उदासी

कहीं नहीं था
गरम नगर में
छाँह का डेरा

लो बीता दिन
लौट रहा सूरज
थके कदम

नीला अम्बर
सोया है सागर में
धीमी लहरें

नाच नचातीं
सड़कों पर गति
गर्म हवाएँ

धूप जाँचती
ऋतुओं की शाला में
जाड़े की कॉपी

टेसू चूनर
अरहर पायल
वन दुल्हन

देश हमारा
हम सबको प्यारा
जीवन से भी

मन का दिया
साहस कर जिया
जलता रहा

आँधी से जीता
नेह तरल पीता
पलता रहा

अबकी साल
वसन्त के सपने
तुम ही तुम

कितनी बाट
तके मन-फागुन
है गुमसुम

नैनों तलक
फहरती सरसों
मन चंदन

ढोल-मंजीर
धनकती धरती
चंग- मृदंग

होली आँगन
मन घन सावन
साजन बिन

केसर-गन्ध
उड़े वन-उपवन
मस्त पवन

पागल भौंरा
भटके दर-दर
बना मलंग

❑❑

11. रचना श्रीवास्तव

सूखी बारिश
बादल ने निचोड़े
चिटके खेत

डॉलर छीने
बेसहारा की लाठी
सूना आँगन

उछला पानी
तट को निहारते
डूबते लोग

बेटी का जन्म
जीवन पराजित
बिलखती माँ

जाति व धर्म
हवा में लगी गाँठ
घुटते लोग

आँखों में धूल
नफ़रत की आँधी
बिखेरे शूल

शहीद हुआ
तो बचा सूना घर
सूनी ही माँग

ख़ुद ही किया
ख़ुद का इंतज़ार
ऐसी तन्हाई

बहन थकी
भाई ने दिया साथ
चाँद हो गई

था चाँद गहा
उसी तड़प को तो
मैंने भी सहा

बेटे का कोट
रोज़ धूप दिखाती
प्रतीक्षा में माँ

सजाती है रंगोली
स्वेटर में पिरोती स्नेह
उड़ने से पहले

भरती माँग
पोंछने से पहले
फौजी विधवा

नन्हें हाथों ने
थामा, जूठा बर्तन
रूठा भविष्य

भूखे अपने
देखें कैसे सपने
मासूम आँखें

बच्चे की पूँजी
खिलौनों की झबिया
माँ का आँचल

निश्छल प्यार
सिर्फ बच्चों के पास
भोला संसार

तुम्हारी याद
चौखट दीप धरूँ
दिवाली-रात

वो घर आएँ
नयन-दीप जलें
दिवाली रात

आज के गीत
घर गाती बेटियाँ
शर्मिन्दा पिता

अश्लील दृश्य
बैठे रहते बच्चे
हटता पिता

मुन्ना निहारे
हाथ लिये अठन्नी
सजी दुकान

घमण्डी चाँद
रात में न निकला
दिया मुस्काया

बच्चों के लिए
माँ हो गई बुढ़िया
पता न चला

तुम्हारे साथ
ख़त्म हुई ज़िन्दगी
पता न चला

न कोई आस
बुढ़ापे का साथ तो
केवल प्यार

सिकुड़ी खड़ी
कोहरे में लिपटी
बेबस रात

बच्चे की भूख
बाज़ार में बिकती
बेबस थी माँ

टाट ओढ़के
खुले में सोता छोटू
याद आती माँ

अलाव जले
चारों ओर आ बैठे
जो दिल मिले

शीत उतरा
ठिठुरता सूरज
घर में छुपा

मरते लोग
अपने ज़हर से
सोचो तो ज़रा

हारा इंसान
अपने ही जाये से
शिकवा क्यों ?

आँखों में चुभे
घायल से सपने
रोये उम्मीद

❑❑

12. डॉ. रमाकान्त श्रीवास्तव

गई है पिकी
प्रतीक्षारता पुनः
आम्र शाखाएँ

गाता है भोर
प्रणय-सिक्त गीत
उषा मुग्ध

गए शिकारी
खोज रही हिरनी
निज हिरना

महुआ खड़ा
बिछा श्वेत चादर
किसे जोहता ?

किसकी व्यथा
छा गयी बन घटा
नभ है घिरा

साँझ का तारा
किसे खोजने आया
अमा निशा में

कौन संदेशा
ले पवन आया है
सुनने तो दो

पुष्पित बच्चे
भरे गुलाबी गन्ध
महके जग

खुल गए हैं
पी कहाँ पुकार से
पृष्ठ पिछले

जलाता सदा
सँझवाती बिरिया
दीप यादों का

कटे बिरिछ
गाँव की दुपहर
खोजती साया

गाँव मुझको
मैं ढूँढ़ता गाँव को
खो गये दोनों

प्रेम बादल
भिगो देता है मन
जब बरसे

बजाने आई
पिकी छिप बाँसुरी
अमराई में

मिल न सके
ज्यों रात और दिन
शापित हम

सहती धरा
सहता आकाश भी
हम भी सहें

आये कोकिल
धुन वंशी की गूँजे
बौर महके

सूनी वीथी में
शेफाली बन झरी
हँसी वन की

गीत न होते
मीत न होते, हम
साँसें ही ढोते

साँझ की वेला
थक चुके हैं पाँव
राह है लम्बी

कौन आया है ?
कोपल ओढ़ लिये
शाख-शाख ने

चाँदनी छाई
प्रेम पाती-सी भाई
तुम न आई

कौन बेचैनी
नदी में है समाई
लहराती है

कोई रोया है
चाँदनी रात भर
ओस के आँसू

❑❑

13. रमेश चन्द्र श्रीवास्तव

हम तो झूठे
गीली आँखों का अर्थ
सही गवाह

चिट्ठियाँ होतीं
एकमात्र सहारा
परदेसी का

हिम्मत बाँधे
अँधेरे के विरुद्ध
एक ही दिया

दंगा भड़का
शहर की गलियाँ
हो गईं बेवा

चलो तलाशें
घर में ही अपने
पावन गंगा

फूलों का प्यार
तितलियाँ ही समझे
उनको चूमें

बसे हो जब
गाँठ बन मन में
कैसे मैं भूलूँ ?

बाँटें तो कभी
नयनों के सपने
मन की भाषा

खिलखिलाना
सरसता से खोले
मन की गाँठ

ईमानदारी
वो चला तलाशने
बाँधे कफ़न

चल पड़े हैं
अंधकार लीलने
सूर्य देवता

एकाग्र मन
बैठ गए जहाँ भी
वहीं ईश्वर

❑❑

14. रामेश्वर काम्बोज 'हिमाशु'

फैली मुस्कान
शिशु की दूधिया, या
हुआ विहान

तुतली बोली
आरती में किसी ने
मिसरी घोली

खिलखिलाई
पहाड़ी नदी-जैसी
मेरी मुनिया

तुम्हारा आना
आलोक के झरने
साथ में लाना

मन्द मुस्कान
उजाले ने दे दिया
जीवन-दान

आए जो आप
जनम-जनम के
मिटे संताप

जीवन-घट
जब जितना ढरे
उतना भरे

सुबह धूप
उतरी आँगन में
ले शिशु-रूप

खुशबू-भरी
हर पगडण्डी-सी
नन्ही दुनिया

अँजुरी भर
आशीष तुम्हें दे दूँ
आज के दिन

फैली चाँदनी
धरा से नभ तक
जैसे चादर

बरस बीते
आँसुओं के गागर
कभी न रीते

बसंत आया
धरा का रोम-रोम
जैसे मुस्काया

तुमको देखा -
मिट गई मन से
चिन्ता की रेखा

नेह की गली
मन में खिली अब
आस की कली

ओस नहाई
शरद की जुन्हाई
है सकुचाई

नदी का तीर
हुआ निर्मल नीर
हर ली पीर

तुम जो बोलीं
बातों के दरिया में
मिसरी घोली

समेटा गया -
न सुधियों का जाल
सिहरा ताल

दूर है गाँव
बची केवल धूप
कहीं न छाँव

वही है मीत
रोम-रोम में बसी
जिसके प्रीत

बीते बरसों
अभी तक मन में
खिली सरसों

परदेस में
उठी तुमको पीर
मैं था अधीर

माँगी तुमने
जब रब से दुआ
मन था चुआ

माथा जो छुआ
हृदय-सागर में
जाने क्या हुआ

जागी उमंग
बज उठी जैसे कोई
जल तरंग

मन की मीन
सुधियों-सी घिरती
रही तिरती

व्याकुल मन
दो पल का मिलन
यही जीवन

जीभर जियो
मिला जो प्रेमरस
बाँट दो, पियो

नयन-जल
पिघला गई कोई
पीर अतल

पोंछो ये पलकें
मोतियों भरे हैं ये
सागर छलके

लुटाओ नहीं
अनमोल ख़ज़ाना
मुश्किल पाना

पावन मन
जैसे नील गगन
नहीं है छोर

दर्द था मेरा
मिल शब्द तुम्हारे
गीत बने थे

❑❑

15. डॉ. सतीशराज पुष्करणा

हमारा गाँव
न जहाँ एक नदी
न कोई नाव

कैसा वक़्त है !
कुत्ता खा रहा रोटी
आदमी बोटी

रौशन हुए
मकाँ को जब देखा-
लगा - घर है

बूढ़ी दादी
आज भी पहचान
पूरे गाँव की

नींद आएगी
आँधियों को तकिया
बना लीजिए

राह में काँटे
हों कि फूल, हमें तो
चलना ही है

धोखा न देते
पेड़ कभी, आज के
बेटों के जैसा

हरहराती
नदी है या तुम्हारी
ये मुक्त हँसी

दु:ख होता है
आता है जब वह
बुढ़ापे जैसा

आई है रात
चलो ! मिलके करें
दिन की बात

हँसो ऐ दोस्त !
रोने से रात छोटी
नहीं होती है

हल्की समझ
जो खोली चिट्ठी, दिल
भारी हो गया

बचपन को
छोड़, सीधा जवान
हो रहे बच्चे

खुशी न दी हो
कुछ दु:ख ज़रूर
बाँटे हमने

प्रेम देकर
तेरे पास बचा क्या ?
जो मैं माँग लूँ !

तेरी यादों के
सूर्य से हर रात
कट जाएगी

ख़त्म हुए हैं
बचे-खुचे रिश्ते भी
सच जो बोला

पानी काँपा
कोई प्यासा खड़ा है
नदी-तट पे

कटा जीवन
मिले कभी अपना
तलाश रही

मिटी थकान
देखकर बच्चे की
शुभ्र मुस्कान

मीठा पानी पी
समुद्र न बदला
खारा ही रहा

तेरी शक्ल में
चाँद उतर आया
मेरे दिल में

तट न मिला
डूब गए जो हम
उन आँखों में

अनेक यादें
देके गया किसी के
पल का साथ

न हटे धूल
मन से, कैसे खिले
मन के फूल

कच्चा घड़ा भी
हो गया नदी पार
सच्चा है प्यार

टकराते न
जहाँ कभी बर्तन
घर न होता

होंठ सिले हैं
तो क्या ! आँखें खुली हैं
बोल ही देंगी

बाती-सी जली
हर दिन-रात को-
हमारी माँ थी

हँसते देख
ऐसा लगा कि वह
बड़ा दुखी है

ऐसा होता है
आँखें भीगती मेरी
दु:ख किसी का

हर रिश्ते में
दु:ख ही सहती हैं
प्राय: बेटियाँ

लाड़ से पलीं
दहेज की आग में
बेटियाँ जलीं

मेरे आँगन
चिड़ियाँ कई आतीं
खुशियाँ लातीं

❑❑

16. डॉ. सुधा गुप्ता

(बारहमासा)

1-चैत्र

चैत्र जो आया
मटकी भर नशा
महुआ लाया

धरा ने किया
वासन्ती-सा शृंगार
सरसों फूली

फूलों की टोपी
हरियाली का कुर्त्ता
दूल्हा वसन्त

2-वैशाख

धूप से डर
पीली छतरी खोले
खड़ा वैशाख

फूल जो खिले
मियाँ वैशाख जले
कोई क्यों हँसे ?

आया है द्वार
धूल-भरी झोली ले
जोगी वैशाख

3-ज्येष्ठ

जेठ की आँच
हवाएँ खौलती हैं
औटते जीव

आग की गुफ़ा
भटक गई हवा
जली निकली

अंगारे बिछा
धरती चली सोने
लपटें ओढ़

4- आषाढ़

बजे नगाड़े
राजा 'इन्दर' आए
ले के बारात

अड़े खड़े हैं
सुरमई हाथी ये
सूँड उठाए

बाल बिखेरे
पर्वत के कन्धे पे
मचली घटा

5-श्रावण

तीज मनाती
हरियर धरती
सुहाग-भरी

सावनी घटा
बुँदियों की ओढ़नी
धानी-सी छटा

खिड़की पर
काँप रही गौरैया
पानी से तर

6-भाद्रपद

भादों के मेघ
बिजली के फूलों की
माला पहने

प्रकृति क्रुद्ध
सटकारती कोड़ा
बिजलियों का

लड़ीं-झगड़ीं
झमाझम रो रही
हैं बदलियाँ

7-आश्विन

बदली हवा
शरारत क्वार की
चढ़ता नशा

नीली चादर
धुनी रुई के गाले
छितर गए

उतार फेंकी
बादल की पोशाक
क्वार-नभ ने

8-कार्तिक

कार्तिक अमाँ
अभिसार को चली
दीपाली-निशा

धरती ने ली
शीत से फुरहरी
माँगा दोशाला

झील-दर्पण
सिंगार कर, झाँकी
शरद-लक्ष्मी

9-अगहन

फिरे अकेली
अगहन की रात
पता पूछती

धूप-जल में
आँखें मूँद नहाते
ठिठुरे पंछी

दस्तक न दे
भड़भड़ाती घुसे
काँपती हवा

10-पौष

रोती रहती
बिन माँ की बच्ची-सी
पूस की धूप

खेतों दौड़ती
पगली कटखन्नी
पूस की हवा

पौष की भोर
हरे शनील पर
बिखरे मोती

11-माघ

माघ बेचारा
कोहरे की गठरी
उठाए फिरे

डालता चौक
आँसू भीगी पातियाँ
माघ डाकिया

राजा तुषार
उजाड़े घर-द्वार
पेड़-पौधों के

12-फाल्गुन

लाल गुलाल
पूरी देह पे लगा
हँसे पलाश

जोगिया टेसू
धारे युवा वैष्णवी
वन में खड़ी

फागुन मस्त
ढिंढोरची वसन्त
सड़कों पर

❑❑

17. सुदर्शन रत्नाकर

अविश्वास से
चटखते बंधन
टूटते मन

हर टहनी
जीवन से भरी थी
काट दी मैंने

पंख फैलाओ
दृष्टिकोण बदलो
अम्बर छू लो

जोश नहीं है
हो गए अब सस्ते
खून के रिश्ते

अकेलापन
तोड़ता तन-मन
आ साथी बन

ओस की बूँदें
फूलों की पंखुरियाँ
मोती चमके

छाई घटाएँ
गगन के आँगन
बरसी बूँदें

बरसी बूँदें
नेह नीर की, मेरे
उर-आँगन

कलियों के हैं
घूँघट मुख पर
खिल जाने दो

घूँघट उठा
क्षितिज में उषा का
अम्बर जगा

ताल सजा है
स्वर्णिम किरणों से
उठो नहाओ

फुनगी पर
चिड़िया है चहकी
ज्यों मेरा मन

साँझ होते ही
तारे बने बाराती
व चाँद दूल्हा

सरसों खिली
खिलखिलाई धरा
आया वसन्त

नहीं बरसा
आसमान से पानी
मन तरसा

आया सावन
कैसा मन-भावन !
सरसा मन

वसन्त आया
मन है भरमाया
बदली काया

आसमान में
आशा के दीप जले
छिटके तारे

वर्षा की बूँदें
भिगो देती हैं तन
लुभातीं मन

चाँदनी खिली
अम्बर-आँगन में
धरती धुली

खिले सुमन
भँवरे मँडराए
बिना बुलाए

बहती हवा
सुरभित अमन्द
भीगते मन

फुनगी पर
चिड़िया है चहकी
ज्यों मेरा मन

बोझिल हुईं
पलक पँखुरियाँ
बँधे मधुप

साँझ ढलते
जल गए दीपक
तेरी यादों के

अधरों पर
फूलों-सी मुसकान
खींचती मन

मन का पंछी
थक गया उड़ते
उतर नीचे

वल्लरियों ने
तोड़ी ठूँठ की आस
छोड़ा है साथ

कुछ तो होगा
यूँ ही नहीं धड़का
दिल का कोना

सालती रही
प्रवंचना तुम्हारी
जीवन भर

ढूँढ़ते रहे
खुशियाँ हर कहीं
मिली उदासी

भीगते रहे
बरसात में हम
प्यासा है मन

व्यथा तुम्हारी
कचोटती है कहीं
मेरा अन्तर

आँसू तुम्हारे
गिरे मेरी आँखों से
मिटे हैं गिले

❑❑

18. डॉ. उर्मिला अग्रवाल

अम्बर-सेज
तारों कढ़ी चादर
दुल्हन रात

अश्रु से भरी
झील-सी आँखें तेरी
मोहतीं मुझे

उमगा मन
अँखियाँ भर आईं
प्रीतम आए

कभी न भरे
घाव जो तूने दिए
आज भी हरे

करकती है
तेरी पीड़ा की रेत
मेरी आँखों में

काँटे ही काँटे
तेरी ज़ुबान पे थे
जो वर्षों सहे

काजल आँजे
सुरमई बादल
निशा-आँख में

चाँदनी रात
डबडबाईं आँखें
तुम्हारी याद

ठिठुरती मैं
सच तुम्हारा प्यार
जाड़े की धूप

तारों के फूल
डलिया भर लाई
मालिन-रात

तुम्हारा प्यार
हारिल का तिनका
छूट न जाए

तृष्णा बहुत
औ' जीवन अपना
खाली सुराही

दिन के नाम
साँझ का लिखा ख़त
रात ने फाड़ा

दीप जला लो
अगर अँधेरा है
गिला न करो

दीपक-बाती
संग जली दीप के
नेह बिना भी

धूप सेंकती
गठियाए घुटने
वृद्धा सर्दी के

नम आँखों से
जब निहारे कोई
सिहरे मन

पहला प्यार
तपती धरा पर
पहली बूँद

पिया की आस
चुनरी तो रँगी ही
मन भी रँगा

बैरागी मन
उसे देख बौराया
साधना टूटी

भटक रहे
पिण्डदान माँगते
मेरे सपने

मैं मुसाफ़िर
तुम रैन बसेरा
रात न आई

यादें पिंजरा
तड़पता रहता
मन-सुगना

रात के आँसू
पत्तियों पे टपके
रवि ने पोंछे

रात के सपने
मुझे डँस ही लेंगे
जो तू न आया

रूप-सागर
तैरने को आतुर
प्राण-शफरी

लजीली धूप
सिमटी सिकुड़ी-सी
बैठी ओसारे

ले गई हवा
बादल उड़ाकर
धरती प्यासी

शीशे-सा मन
पाहन-संग नेह
चोट तो आती

सागर खारा
अमृत तो पी गए
देवता लोग

साथ तो रहे
पर अजनबी-से
क्यों हुआ ऐसा?

सीप प्यासी है
सागर में बरसो
हे स्वाति मेघ !

सूरज धुना
मेघ-रुई के गोले
धुनता रहा

स्वप्नों की राख
फिर कुरेद डाली
जलाए हाथ

❑❑

परिचय

1. देवी नागरानी

जन्म : 11 मई 1941, कराची (तब भारत)

शिक्षा : बी.ए.

सृजन : हिन्दी, सिन्धी और अंग्रेज़ी में आठ काव्य-संग्रह, जिनमें ग़ज़ल-संग्रह प्रमुख हैं। आकाशवाणी मुम्बई से हिंदी तथा सिंधी काव्य व ग़ज़ल का पाठ।

सम्प्रति : शिक्षिका, न्यूजर्सी (यू.एस.ए.)

सम्पर्क : dnangrani@gmail.com

ब्लॉग : http://charagedil.wordpress.com

2. हरदीप कौर सन्धु

जन्म : 17 मई 1969, बरनाला (पंजाब)

शिक्षा : बी. एससी., बी.एड., एम.एससी. (वनस्पति विज्ञान), एम. फिल., पीएच.डी.।

सृजन : कविता, कहानी, लेख, हाइकु (पंजाबी व हिन्दी भाषा) प्रकाशित। http://hindihaiku.wordpress.com का कुशल सम्पादन।

सम्प्रति : सिडनी (आस्ट्रेलिया) में अध्यापन।

सम्पर्क : dsandhu17@gmail.com

ब्लॉग : http://shabdonkaujala.blogspot.com
http://punjabivehda.wordpress.com ,
http://despardes.blogspot.com

3. कमला निखुर्पा

जन्म : 5 दिसम्बर 1967, पिथौरागढ़ (उत्तराखण्ड)

शिक्षा : एम.ए. (हिन्दी), बी.एड.

सृजन : कविताएँ, नवगीत, हाइकु, लघुकथा, नाटक, संस्मरण आदि।

सम्प्रति : हिन्दी प्रवक्ता, केन्द्रीय विद्यालय वन अनुसंधान संस्थान, देहरादून।

सम्पर्क : kamlanikhurpa@gmail.com

ब्लॉग : http://yugchetna.blogspot.com

4. डॉ. कुँअर बेचैन

जन्म : 1 जुलाई 1942, ग्राम - उमरी (मुरादाबाद), उ. प्र.

शिक्षा : एम कॉम, एम.ए. (हिन्दी), पी-एच. डी.।

सृजन : गीत-ग़ज़ल, कविता, हाइकु, उपन्यास आदि विधाओं में दर्जनों पुस्तकें प्रकाशित। हिन्दी-जगत के अग्रिम पंक्ति के ग़ज़लकार।

सम्प्रति : गाज़ियाबाद के एक कॉलेज के हिन्दी विभागाध्यक्ष पद से सेवानिवृत्त।

सम्पर्क : kbechain@yahoo.co.in

ब्लॉग : www.kunwarbechain.blogspot.com

5. मंजु मिश्रा

जन्म : 28 जून 1959, लखनऊ

शिक्षा : एम.ए. (हिन्दी)

सृजन : कविताएँ, हाइकु, क्षणिकाएँ, मुक्तक, ग़ज़ल आदि।

सम्प्रति : व्यापार-विकास-प्रबन्धक, केलिफ़ोर्निया (यू.एस.ए.) के कुछ विद्यालयों में 'आफ़्टर स्कूल हिन्दी लर्निंग कार्य्रक्रम' का भी संचालन।

सम्पर्क : manjumishra@gmail.com

ब्लॉग : http://manukavya.wordpress.com

6. मुमताज़

जन्म : 29 नवम्बर 1972, बरेली (उ. प्र.)

शिक्षा : बी ए

टी. एच. खान

जन्म : 30 अगस्त 1961, बरेली (उ. प्र.)

शिक्षा : बीएस.सी., एम.ए. (अर्थशास्त्र)।

सम्प्रति : स्वयं का व्यवसाय

सम्पर्क : bkbushra99@gmail.com

7. नवीन चतुर्वेदी

जन्म : 03 मार्च 1949, इटावा

शिक्षा : एम.ए. (राज. वि., इतिहास, हिन्दी), बी.एड.

सृजन : कविता, नाटक, समीक्षा आकाशवाणी के केन्द्रों से प्रसारण। नैतिक शिक्षा 1-5 भाग का सह सम्पादन।

सम्प्रति : उ.मा. स्कूल के प्राचार्य पद से सेवा निवृत्त।

सम्पर्क : rekha_123429@rediffmail.com

8. निर्मला कपिला

जन्म : 25 नवम्बर 1949, गाँव - रायपुर सहोडां, जि. ऊना (हि.प्र.)

शिक्षा : डिप्लोमा इन फार्मेसी।

सृजन : कहानी, कविता, गज़ल, नज़्म, हाइकु, लघुकथा आदि। दो कहानी-संग्रह और एक काव्य-संग्रह प्रकाशित। रेडियो प्रसारण। पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशन।

सम्प्रति : सेवा-निवृत्त (पंजाब सरकार)

सम्पर्क: nirmla.kapila@gmail.com

ब्लॉग : http://www.veerbahuti.blogspot.com
www.veeranchalgatha.blogspot.com

9. पूर्णिमा वर्मन

जन्म : 27 जून 1955

शिक्षा : संस्कृत साहित्य में स्नातकोत्तर उपाधि, स्वातंत्र्योत्तर संस्कृत साहित्य पर शोध, पत्रकारिता और वेब डिज़ायनिंग में डिप्लोमा।

सृजन : साहित्य की सभी विधाओं में उत्कृष्ट लेखन, जलरंगों, रंगमंच, संगीत और स्वाध्याय से दोस्ती। संयुक्त अरब अमीरात के शारजाह नगर में विश्वप्रसिद्ध साहित्यिक जाल पत्रिकाओं 'अभिव्यक्ति' और 'अनुभूति' के संपादन में व्यस्त।

कविता संग्रह : वक्त के साथ, सम्पादन : वतन से दूर (कहानी-संग्रह) प्रकाशित।

सम्पर्क : abhi_vyakti@hotmail.com

वेब साइट : http://www.anubhuti-hindi.org
http://abhivyakti-hindi.org

ब्लॉग : http://navgeetkipathshala.blogspot.com

10. रचना श्रीवास्तव

जन्म : सितम्बर 1968, लखनऊ

शिक्षा : बी.एससी., एम.ए. (हिन्दी), बी.एड.

सृजन : कहानी, कविता, हाइकु, नवगीत, लेख, लघुकथा विश्वजाल और विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं, संकलनों में प्रकाशित। रेडियो डैलस, फ्लोरिडा, ह्यूस्टन (यू.एस.ए.) में नियमित कविता पाठ, (डैलस में रेडियो संचालन भी किया।

सम्प्रति : स्वतन्त्र लेखन

सम्पर्क: rach_anvi@yahoo.com

11. डॉ. रमाकान्त श्रीवास्तव

जन्म : 15 जुलाई 1921, पूरे मोहनलाल (कैथल का पुरवा),
जनपद (रायबरेली)

सृजन : विगत 75 वर्षों से कविता, गीत, कहानी, हाइकु, नाटक, एकांकी, रेखाचित्र, रिपोर्ताज आदि सभी विधाओं में सृजन एवं प्रकाशन। अनेक सम्मान प्राप्त। हाइकु के क्षेत्र में विशेष कार्य। स्वतन्त्र लेखन।

सम्पर्क : एल - 6/96, सेक्टर एल,
अलीगंज, कुर्सी रोड, लखनऊ -226024

12. रमेश चन्द्र श्रीवास्तव

जन्म : 12 दिसम्बर 1955; असनहरी, जि. बस्ती (उ. प्र.)

शिक्षा : स्नातक

सृजन : ग़ज़ल, हाइकु, लघुकथा, कहानी आदि। सैकड़ों रचनाएँ प्रकाशित।

सम्प्रति : एल आई यू, पुलिस भवन, मऊ-275101(उ. प्र.)

ब्लॉग : http://rachana- merikavitayen.blogspot.com

13. डॉ. सतीशराज पुष्करणा

जन्म : 05 अक्टूबर 1946, लाहौर (पंजाब), अब पाकिस्तान में

शिक्षा : बी.एससी.

सृजन : उपन्यास, कहानी, लघुकथा, कविता, खण्ड काव्य, हाइकु, समीक्षा। लघुकथा के क्षेत्र में ऐतिहासिक कार्य। कई पुस्तकों का सम्पादन । कई पत्रिकाओं के सहयोगी सम्पादक।

सम्प्रति : स्वतन्त्र लेखन एवं प्रकाशन-व्यवसाय।

सम्पर्क : satishrajpushkarana@gmail.com

ब्लॉग : http://satishrajpushkarana.blogspot.com

14. डॉ. सुधा गुप्ता

जन्म : 18 मई 1934; मेरठ

शिक्षा : एम.ए. हिन्दी (प्रथम श्रेणी, प्रथम पद) पीएच.डी., डी.लिट्.

सृजन : 12 हाइकु संकलन, आठ काव्य-संग्रह, तीन बाल-गीत संग्रह,

तीन दर्जन शोध ग्रन्थ प्रकाशित। दर्जनों संग्रहों की भूमिका-लेखन। हाइकु को हिन्दी-जगत् में प्रतिष्ठित करने वाली कवयित्री।

सम्प्रति : डिग्री कॉलेज के प्राचार्या पद से सेवा निवृत्त; स्वतन्त्र लेखन।

सम्पर्क : 'काकली', 120/बी, साकेत, मेरठ-250003 (उ.प्र.)

15. सुदर्शन रत्नाकर

जन्म : 11 सितम्बर 1942 (पानीपत)

शिक्षा : एम.ए. (हिंदी)

सृजन : कविता, कहानी, उपन्यास, हाइकु, लघुकथा। कई कविता-संग्रह, कहानी-संग्रह एवं उपन्यास प्रकाशित। हरियाणा साहित्य अकादमी द्वारा सम्मानित। केन्द्रीय विद्यालय संगठन द्वारा राष्ट्रीय प्रोत्साहन पुरस्कार।

सम्प्रति : स्वतन्त्र लेखन।

सम्पर्क : sudershanratnakar@gmail.com

16. डॉ. उर्मिला अग्रवाल

जन्म : 15 अगस्त 1948; मेरठ

शिक्षा : हिन्दी स्नातकोत्तर उपाधि, पीएच.डी. (हिन्दी)

सृजन : हाइकु के तीन और ताँका के दो संग्रह प्रकाशित। सार्थक रचनाकर्म द्वारा हाइकु के क्षेत्र में विशेष योगदान।

सम्प्रति : डिग्री कॉलेज के प्राचार्या पद से सेवानिवृत्त, स्वतन्त्र लेखन।

सम्पर्क : 15, शिवपुरी, मेरठ-250001 (उ. प्र.)

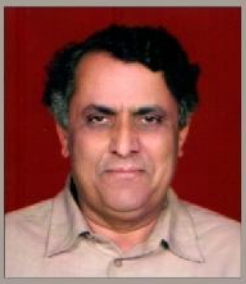

रामेश्वर काम्बोज 'हिमांशु'

जन्म : 19 मार्च, 1949

शिक्षा : एम. ए. (हिन्दी) मेरठ विश्वविद्यालय से प्रथम श्रेणी में, बी.एड्.।

प्रकाशित रचनाएँ : माटी, पानी और हवा, अंजुरी भर आसीस, कुकड़ूँ कूँ, हुआ सवेरा (कविता संग्रह), धरती के आँसू, दीपा, दूसरा सवेरा (लघु उपन्यास), असभ्य नगर (लघुकथा संग्रह), खूँटी पर टँगी आत्मा (व्यंग्य-संग्रह), भाषा-चन्द्रिका (व्याकरण), मुनिया और फुलिया (बालकथा हिन्दी और अंग्रेज़ी), झरना (पोस्टर कविता - बच्चों के लिए) लघुकथाएँ गुजराती, पंजाबी, उर्दू ,अंग्रेज़ी एवं नेपाली में अनूदित।

सम्पादन : आयोजन, नैतिक कथाए (पाँच भाग), भाषा-मंजरी (आठ भाग), बाल मनोवैज्ञानिक लघुकथाएँ एवं www.laghukatha.com

प्रसारण : आकाशवाणी गुवाहाटी, रामपुर, नज़ीबाबाद, अम्बिकापुर एवं जबलपुर।

◆केन्द्रीय विद्यालय के प्राचार्य पद से सेवा निवृत्ति, सम्प्रति स्वतन्त्र लेखन।

संपर्क : 37 बी/2 रोहिणी, सैक्टर-17, नई दिल्ली-110089

ई-मेल : rdkamboj@gmail.com

भावना कुँअर

जन्म : 12 फरवरी, 1967 मुजफ्फ़रनगर (उ.प्र.)

शिक्षा : हिन्दी व संस्कृत में स्नातकोत्तर उपाधि, बी.एड. ,पी-एच.डी., टेक्सटाइल डिज़ाइनिंग, फैशन डिज़ाइनिंग में डिप्लोमा।

सम्प्रति : कई वर्षों से युगांडा में अध्यापन, अब सिडनी (आस्ट्रेलिया) में।

रचनाओं का प्रकाशन : कविता, कहानी, गीत, हाइकु, बालगीत विश्व की विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं और अंतर्जाल में प्रकाशित। यात्रा-लेख हिन्दी-पाठ्यक्रम में शामिल।

प्रकाशित कृतियाँ : साठोत्तरी हिन्दी ग़ज़ल में विद्रोह के स्वर व उसके विविध आयाम (शोध), तारों की चूनर (हाइकु संग्रह), रोमांचक यात्रा (प्रकाश्य)

◆'हिन्दी गौरव' मासिक (आस्ट्रेलिया) की सम्पादन समिति में।

ब्लॉग : http:/dilkedarmiyan.blogspot.com
http://drbhawna.blogspot.com

ई-मेल : bhawnak2002@gmail.com